# भगवत् कृपा

# THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

| | | |
|---|---|---|
| वर्ष-13, अंक-6<br>मंगलवार, 26 जून '90 | सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी | वार्षिक चन्दा-10.00<br>प्रति अंक : 1.00 |


**गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।**
**गुरुः साक्षात् परब्रह्मः तस्मै श्री गुरवे नमः॥**

आध्यात्मिक पथ पर चलते सेवकों के लिए भारतीय संस्कृति में सबसे अधिक महत्व का पर्व 'गुरुपूर्णिमा' का है। आदि आचार्य व्यासजी ने आषाढ़ी पूर्णिमा के दिन प्रगट होकर शीतल शान्त पूर्णिणा के चन्द्र समान सत् स्वरूप सच्चे सद्गुरु के पूजन का दिन मनाने गुरुपूर्णिमा उत्सव की शुरूआत करवाई। शास्त्रों में 'गुरु' की महिमा का अनहद् गान किया। स्वयं पूर्णतया समर्थ होते हुए भी अवतारी युग पुरुषों ने जीवन में 'गुरु' की अनिवार्यता पर विशेष बल दिया है। दूरदर्शन पर प्रसारित ''रामायण' व 'महाभारत' धारावाहिक द्वारा भी हम सभी ने देखा कि स्वयं भगवान विष्णु ने भी 'राम' के रूप में जन्म लेकर गुरु वशिष्ठ की आज्ञा बिना जीवन का कोई महत्वपूर्ण निर्णय नहीं लिया। भगवान श्री कृष्ण ने भी सांदिपनी गुरु के पास रहकर शिक्षा ग्रहण की और गुरु की महिमा को और अधिक विकसित किया।

स्थूल शरीर के लिए जैसी और जितनी अनिवार्यता 'प्राणवायु' की है, वैसे ही आत्मा के लिए सच्चे संत–सच्चे गुरु का संबंध आवश्यक है। सच्चा गुरु शिष्य को जन्म-मृत्यु के बंधन को छुड़ाकर उसकी चेतना को ऊर्ध्वगामी बनाकर आत्यंतिक मुक्ति की राह पर अग्रसर करता है।

दूध के कण-कण में घी समाया होता है, पर उसमें से घी निकालने दूध का रीति से मंथन करना पड़ता है, वैसे ही हर प्राणी मात्र में अल्प या अधिक मात्रा में प्रभु के प्रति की आस्तिकता होती ही है, पर सच्चे गुरु के मिलने पर ही उन आन्तरिक गुणों का समुचित विकास होता है। वासना का क्षय और प्रकृति-स्वभाव को दिव्यता में आमूल परिवर्तित करे–जीवभाव टालकर ब्रह्मभाव में स्थित करके हमें परमात्मा में जोड़े–वही सत्य स्वरूप 'सच्चा गुरु' है। प्रभु का ऐसा अखंड धारक संत ही हमारी आत्मा पर पड़े हुए बुरे संस्कारों के धब्बे धो करके उसे निर्मल व स्वच्छ बना सकता है। ऐसे समर्थ गुरु का हाथ दृढ़ विश्वास व श्रद्धा से हरेक संजोगों में पकड़े रखेंगे तो वे हमारी नाव को भव सागर पार करा ही देंगे....इसीलिए तो कहा जाता है–

प्रभु प्राप्ति के लिए गुरु मार्ग ही सबसे सुगम व सरल मार्ग है।

पर, सच्चे गुरु को पहचानें कैसे? सच्चा गुरु हमारे संसार–हमारे व्यवहार का जिम्मा उठाते हुए हमारे चैतन्य के विकास के लिए परमात्मा से हमारा संबंध दृढ़ कराने की एक मंगलकारी भावना से हरेक सैकण्ड-सैकण्ड का उद्यम करता रहेगा। हाँ, सच्चे गरू की कृपा द्वारा सिर्फ हमारे सांसारिक कार्य हल कराना तो पारस के मोल कूड़ा खरीदने जैसा है। सच्चे गुरु की प्रसन्नता का फल खूब ही ऊँचा, अविनाशी व नित्य तत्त्व की प्राप्ति कराने के लिए होता है। सच्चा गुरु प्रभु की ही रसधन मूर्ति में नित्य मग्न रहता है। प्रभु में से उसे जो पल-पल प्रेरणा मिलती है वही वह करता है। वह कभी भी अपने आपको शिष्यों में बाँधता नहीं है। सभी में बँधा हुआ दिखते हुए भी वह किसी का भी न रहकर, अपने आपको सिर्फ प्रभु में ही बाँधे रखता है। वह समता, शान्ति, संतुष्टि, तृप्ति, अहिंसा, उदारता, सरलता, गंभीरता, क्षमा, सहिष्णुता, सत्य व संयम का मूर्तिमान स्वरूप होता है। उसका हृदय विषाद, शोक, भय, उद्वेग, काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, ईर्ष्या, दर्प, अभिमान, दंभ आदि दोषों से सर्वथा रहित होता है। वह हर्ष-शोक, मान-अपमान, निंदा-स्तुति, मित्र-शत्रु, प्रिय-अप्रिय के द्वन्द्वों की सीमा से परे होता है। स्वयं का 'स्व' परमात्मा में लीन कर चुका होता है।

सच्चा गुरु शिष्य की जिम्मेदारी तो लेता ही है पर अगर शिष्य की आन्तरिक सुरुचि हो तो गुरु शिष्य को अपने जैसा भी बना देता है।

1. शिष्य का गुरु के प्रति अनन्य प्रेम–गुरुकृपा प्राप्त करने का प्रथम सोपान है।
2. गुरु के वचन में विश्वास व अनन्य एकाग्रता–गुरुकृपा प्राप्त करने का द्वितीय सोपान है।
3. मन, बुद्धि, चित्त का total समर्पण–गुरुकृपा प्राप्त करने का तृतीय सोपान है व
4. निरहंकार बनकर हरेक के पास दासभाव से जीना–गुरुकृपा प्राप्त करने का अन्तिम सोपान है।

हम सब कितने भाग्यशाली ! हमें तो ऐसे गुरु की खोज करनी नहीं पड़ी। महाप्रभु स्वामिनारायण ने ऐसे सच्चे संत द्वारा पृथ्वी पर अपना प्रगटीकरण अखंड रखा है। हमारे जीवन की डोर ऐसे समर्थ गुरु ने अपने हाथ थाम ली ! प.पू काकाजी कई बार कहते थे–**'जहाँ सबकी पूजा, तप, व्रत, उपासना समाप्त होती है वहाँ से हमारी साधना शुरु होती है।** गुणातीत परम्परा के हरेक गुणातीत स्वरूप ने स्वयं एक 'गुलाम' भाव से ही अल्प संबंध वालों को भी प्रभु का ही स्वरूप मानकर सेवा करके भक्ति अदा करी है। भगवान के मार्ग पर स्वयं के बल-बुद्धि के बूते पर व परिश्रम से प्रगति करना संभव ही नहीं इससे भी अधिक–जीव की क्या ताकत, जो अनंत ब्रह्मांडों के अधिपति–माया से परे के पुरुष को पहचानकर उन्हें प्रसन्न कर लें? जगत के मायिक पदार्थों अमायिक पुरुष को त्रिकाल में भी राजी नहीं कर सकते।

**गुरु के पास तो दो हाथ जोड़कर सरल बनकर उसकी शरण में पड़े रहना ही शिष्य को प्रभु के मार्ग पर सफल बना सकता है।** ऐसा बुद्धि से परे का समर्पण गुरुहरि योगीजी महाराज के पास प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. हरिप्रसाद स्वामीजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी,प.पू. साहेब जैसी विभूतियों ने किया और आज स्वयं साक्षात् प्रभु रखे सच्चे संत का मूर्तस्वरूप बन गये। हम

सभी ने इन गुणातीत स्वरूपों की अद्भुत महिमा का अपने जीवन में अनुभव किया है। हमारे चैतन्य के विकास के लिए उनके अनुपम निःस्वार्थ परिश्रम को निहारा है। इससे भी अधिक–हमारे गुरु हमसे हार, पूजन, भेंट आदि की अपेक्षा नहीं रखते, बल्कि हमें जगत, माया व अंतर को परेशान करते हुए सूक्ष्म स्वभावों से, अहंता-ममता, लोक-भोग वासना से ऊपर ले जाकर देह रहते हुए अक्षरधाम का सुख देना चाहते हैं। अगर उनकी योजना में हम साथ देंगे तो जैसे अर्जुन को नर से नारायणरूप बनाकर न्याल कर दिया, वैसे वे हमें न्याल-न्याल कर देंगे। तो आईये, हम सब 'गुरुपूर्णिमा' के परम पवित्र अवसर पर उनकी योजना में याहोम करने कृतसंकल्प होकर स्वयं का जीवन धन्य करें व गुरुभक्ति अदा करें...।

* * * *

# जन्म-कर्म च मे दिव्यं—

बम्बई से भारतीय विद्या भवन में अंग्रेजी में Bhavan's Journal पाक्षिक प्रकाशित होता है। उसमें एक article निकलता था "How God came into my life." (भगवान मेरे जीवन में कैसे आये?) इस Title के नीचे अलग-अलग संतों-परमहंसों को किस प्रकार प्रभु का साक्षात्कार हुआ, उस बारे के प्रसंग व अनुभव आते थे। बम्बई में स्थित हम संतों को ऐसा विचार आया कि हमारे गुरुहरि योगीजी महाराज भी एक विरल विभूति हैं, तो उनसे अनुभव प्रसंग पूछकर पाक्षिक में छपवायें.....जिससे सबको ऐसे एक प्रभु रखे निर्मल पवित्र संत की प्रतिभा का ख्याल आये। संतों ने गुरुहरि योगीजी महाराज को इस बात का जिकर करते हुए कहा कि–आपको भगवान के दर्शन हुए हों ऐसे प्रसंग बताओ तो हम इस पाक्षिक में छपने भेजे.....

गुरुहरि योगीजी महाराज तो सहज ही हँसते-हँसते बोले–''**हमें तो अखंड भगवान का दर्शन है।**''

यह प्रसंग खूब छोटा है, पर इसी बात से हम विचार करें कि या तो पागल या तो सचमुच जिसे प्रभु का अखंड दर्शन हो वही यह बात इतने दावे से कह सकता है न? जिसे पल भर के लिए प्रभु के दर्शन हुए हों उसके लिए यह प्रश्न उचित है, परन्तु जो साधु नख से शिख तक 24 घंटे अखंड प्रभु धारण किये हो उसे अनुभव की आवश्यकता ही क्या? कैसी भव्य विरासत महाप्रभु स्वामिनारायण ने धरती पर छोड़ रखी है ! कैसी भव्य प्राप्ति हुई हैं हमें !!

महर्षि अरविंदों को जेल प्रवास दौरान दो मिनट के लिए विष्णु भगवान के चतुर्भुज स्वरूप के दर्शन हुए थे....उन्हें जीवन के आखिरी क्षण तक उस दर्शन का आनंद रहा। जबकि हमें तो अखंड प्रभु रखे संत मौज रूप में मिले हैं और उनके दर्शन, सेवा, समागम का भी निरन्तर लाभ मिलता रहता है–वह हमारा कितना सौभाग्य?

* * * *

ब्रह्मप्रवाह

## —: गुरुपूनम :—

अनादि सनातन, सभी के, सभी काल के लिए हमारे सच्चे गुरुजी गुणातीत हैं और अब प्रगट ब्रह्मस्वरूप के रुप में गुणातीतरुप से-साक्षात् दिव्यस्वरुप के रुप मैं ही हमें मिले हैं। 'उन्होंने हमें निजी गिनकर ग्रहण किया है'-यह ठहराव-बात-रहस्य व समझदारी की पक्की गाँठ जीव में दृढ़ हो यही प्रार्थना।

हमारे गुरुजी को सुहृद्भाव व निर्दोष भाव अत्यंत जँचता है। इसलिए उस प्रकार सब हिल-मिलकर एक मन से गुरुजी व उनके संबंध वालो के गुणगान गाते-गाते और महिमा में सेवा करते-करते हमारे जीवन को सहज बनाये वही अभ्यर्थना।

अन्त में गुरुजी को राजी कर लेने– पू. हरिप्रसादस्वामी, पू. अक्षरविहारीस्वामी, पू. पुरुषोत्तमस्वामी, पू. महापुरुषस्वामी, पू. मुकुंदजीवनस्वामी–वगैरे बड़े संतों की अनुवृत्ति अनुसार सरल प्रकृति से वर्त पायें और पू. हरिप्रसादस्वामी तथा बड़ों को जरा भी झुकायें न– वैसी सद्बुद्धि, प्रेरणा व सद्भावना हमेशा अर्पण करना वह ही अंतर की अभिलाषा रखते हैं। अभी भी बहुत मनमानी होती होगी। संकल्पों, पुरानी वृत्तियाँ, मान्यताएँ, उर्मियाँ बाधारूप बनती होंगी। वह पूर्णतया टल जाये–पुराने स्वरूप के साथ आमूल तल्लाक ले लेवें–वह भूतकाल भूल जायें–व नया दिव्य जन्म गुरुजी ने कराया और परमपिता–दयालु–कृपालु अखंड रक्षा करते रहकर आसानी से अक्षरधाम की मौज देते हैं और ऐसे एक रुचि वाले मंडल में हमें रखते हैं। तो, उनमें कहीं भी भावफेर होवे ही नहीं व सभी ब्रह्म की मूर्तियाँ मनायी जायें–व छोटे से छोटे संत हरिभक्त की निर्मानीपन से सेवा होती जायेगी वही अंतिम-गुरुचरणों में हम सबकी अर्ज है, सो स्वीकारने की विनती है।

तो–'जीवन हम समर्पित करें–आप लेते हुए कुछ भी बाकी नहीं रखना।'

ऐसा सच्चा सम्यक् समर्पण शक्य बनें–गुरु के प्रताप से और सदा सुखी रखें यही प्रार्थना–

: स्वयं के

जय स्वामिनारायण

सब मिलकर 'गुरुपूनम' पर ऊपर लिखी प्रार्थना करके स्मृति करके गुरुजी का दिव्यभाव से पूजन करना। सब मिलकर 10 मिनट धून्य करके-10मिनट सर्व संतमंडल को अपार बल मिले इस हेतु गुरुजी की मूर्ति धारकर प्रार्थना करना (मानसी में) हमारी तरफ से लाडु का प्रसाद प्रेम से ग्रहण करना।

गुरुपूनम की भेंट (रुपये-101/-) अलग लिफाफे में भेजी है।

सब राजी रहना।

**दादुभाई के**

**जय स्वामिनारायण !**

**अगस्त' 67**

## व्रतोत्सवसूची

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1. | दि. | 3.7.90 | मंगलवार | देवशयनी एकादशी, व्रत, चातुर्मास प्रारंभ |
| 2. | दि. | 7.7.90 | शनिवार | व्यास पूजा, गुरुपूर्णिमा |
| 3. | दि. | 18.7.90 | बुधवार | एकादशी, व्रत |

**PUBLISHED BY SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY**
A-103, Ashok vihar-III, Swaminarayan Marg, Kakaji Lane, Delhi-110052. (India) Tel. : 7229327, 7128838
Printed at R.P. Printers, Shahadra, Delhi-110032